coni. 15.) चतस्रः पुरस्तात् is wanting in some mss. of Kâtyâyana. 16.) वस्ताः हि॰ М. वस्तस्वाः हितीयपस्येकव॰ ММ. 17.) वयसा is wanting in М. ММ. 18.) व्याकृताः М. 19.) व्ययं पृष्ठि the Brâhmaṇa. 20.) पूर्वस्त॰ М. ММ. 21.) ग्राप्यायेषु ММ. 22.) हादशः М. हादश ММ. 23.) मितकादा कृन्दो ММ. 24.) ॰ इपं कृन्दस्त॰ ММ. 25.) पादौ М. ММ. 26.) मङ्गे М. 27.) संस्तंवः ММ. 28.) वायुर्भूवा М. 29.) पश्चसृतु॰ М. ММ. 30.) М adds ग्राधकमासाभिप्रायेण. 31.) हादश М. 32.) ॰ गञ्चति जन्मना М. 33.) वृत्तहे the mss. of the Brâhmaṇa. 34.) I should like to add here पतिर्व. 35.) ॰ रस्तुत М. 36.) but the accent of the Brâhmaṇa divides both words into two. 37.) Here closes a great lacuna in A., where the whole Adhyâya from the beginning till to these words is wanting. 38.) ॰ रस्तुत A. 39.) М. and ММ. add इति विद्वीप हितीयतृतीयचतृर्वचितिमस्त्रित्रपणं चतुर्दशोऽध्यायः ॥

Adhyaya XV. kaṇḍik. १-६३ are explained in the Çatap. Brâhm. र, ५, १, १ - ७, ३, ११ (with the exception of २०-३८): the are quoted by Kâtyây. १७, ११, १ - १२, २७. —

1.) गजास्यं नृक्रिं गङ्गां वाचं लक्मीमुमां गुरुम्। नवा पञ्चदशिष्ध्याये वेददीप उद्गित ॥ चतुर्दशिष्ध्याये М. ММ. 2.) प्रस्माकधि॰ А. 3.) ॰ताननुत्पत्स्यमानानिप А. 4.) ॰न्द्रन्नपञ्चदश॰ ММ. 5.) against the Pada and the accent, who show, that we are to read ग्रायंजस्व, not पजस्व. 6.) दश ММ. दश्द А. М. 7.) प्रकृता А. 8.) प्रज्ञाम॰ ММ. 9.) ग्राव्रियत is wanting in А. 10.) विचित्रव्या॰? coni. 11.) समुद्रवत्र्य॰? coni. 12.) We exspect समुद्रश्कृन्दः as the Brâhmaṇa too reads: but the mss. omit the कृन्दः. 13.) वा is wanting in А. 14.) कुप्रदी॰ А. कुप्रदी॰ ММ. 15.) कपीत॰ А. 15.) ॰रावित्रय॰ А. ॰रावित्रय॰ ММ. 17.) वित्राखनयोः А. 18.) भोज्यत्रे А. भोजते ММ. भोज्यत्रे is my coniecture. 19.) is wanting in А. 20.) We are to exspect गिरश्कृन्द. 21.) भाजश्कृन्दंः С. 22.) is wanting in ММ. ग्रस्थ А. 23.) करिश्न॰ А. 24.) दुः-विन रिक्रणं А. 25.) ॰प्रयाजजात॰ А. 26.) तद्वि this root is wanting in Pâṇi-